डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

Date 25/7/20

विषय- संस्कृत, बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, तृतीयपत्र
कादम्बरी- शुकनासोपदेश
गद्यांश व्याख्या

विशेषेण तु राज्ञाम। विरला हि तेषामुपदेष्टारः। प्रतिशब्दक इव राजवचनमनुगच्छति जनो भयात्।

सान्वयव्याख्या - (विशेषेण तु राज्ञाम) ऐसा गुरु का उपदेश राजाओं के लिए विशेष- रूप से उपयोगी है क्योंकि (तेषामुपदेष्टारः विरला हि) उनको उपदेश देने वाले विरले ही होते हैं। (जनो भयात) व्यक्ति भय के कारण (राजवचनम) राजा के वचनों (आदेशों) का (प्रतिशब्दक इव) प्रतिध्वनि की भांति (अनुगच्छति) अनुसरण करता है।

भावार्थ:- हे चन्द्रापीड! यह उपदेश केवल तुम्हें ही दिया जा रहा हो, ऐसी बात नहीं अपितु सभी राजाओं को यह उपदेश विशेषरूप से दिया जाना चाहिए और यह भी मत समझना कि प्रभुत्व सम्पन्न लोगों को हित-अहित की शिक्षा देने वाले बहुत होते होंगे। इन राजाओं को उपदेश देने का साहस रखने वाले विरले ही होते हैं। प्रतिवाद की आवश्यकता

होने पर भी लोग इस से राजा के कहे पीछे उसी तरह चलते हैं जैसे कि प्रतिध्वनि सदा मूल ध्वनि का ही अनुगमन करती है।

टिप्पणी :-

यहाँ 'जनः' उपमेय, 'प्रतिशब्दकः' उपमान, 'इव' औपम्यवाचक तथा 'अनुगच्छति' साधारणधर्म है अतः यहाँ 'पूर्णोपमा' अलंकार है। हि के 'निश्चय' और 'हेतु' दोनों अर्थ यहाँ प्रसंगानुकूल है- 'हि हेताववधारणे' (अमर० 3.5.57) उपदेष्टारः = उप + दिश् + तृच् प्र० ब०।

प्रतिशब्दकः = शब्दं पश्चात् प्रतिशब्दम् (अव्य०) प्रतिशब्दं करोति प्रतिशब्दकः (प्रतिशब्द + अक्)

राजवचनम् = राज्ञः वचनम् (ष० तत्पुरुष)।

अनुगच्छति = अनु + गम् लट् प्र० पु० एकवचन।

भयात् = हेतौ पञ्चमी। इति।

Scanned with CamScanner